दो दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

15 - 16 जनवरी, 2024

लोक साहित्य एवं संस्कृति : चिन्तन और चुनौतियाँ

–: संगोष्ठी संयोजक :–

डॉ. नीतू परिहार

सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

Email : loksahityaseminar@gmail.com | सम्पर्क सूत्र - 9413864055, 7976284818

पंजीयन गूगल लिंक : https://forms.gle/GN4SRJJATieUt28K7

लोक साहित्य एवं संस्कृति : चिन्तन और चुनौतियाँ

सैकड़ों वर्षों की गुलामी के कारण भारतीय चेतना भाव शून्य एवं कुंठित हो गई थी। ऐसे में संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से आम आदमी ने अपना मुंह मोड़ लिया। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में वह अपने इतिहास, साहित्य, कला-संस्कृति को विस्मृत करने लगा किंतु जब राष्ट्रीय आंदोलन प्रारंभ हुआ और स्वतंत्रता की चाह बलवती हुई तो वह अपनी जड़ों की ओर लौटने लगा। वह अपनी साहित्य-संस्कृति-कला की ओर बरबस ही खिंचने लगा। इसी क्रम में उसका ध्यान लोक साहित्य की ओर गया जिसमें लोक वार्ता, लोक गाथा, लोक संस्कृति, लोक नाट्य, लोक नृत्य, लोक संगीत आदि सम्मिलित हैं। पीढ़ियों से दादी-नानी से सुनते आए इस लोक संस्कृति की कला को समझना- जानना-परखना शुरू किया। यह भी सच्चाई है कि भारतीय संस्कृति की आत्मा लोक संस्कृति में बसती है। किसी भी देश की लोक संस्कृति उस देश के इतिहास का दर्पण होती है। भारत की लोक संस्कृति विस्तृत और समृद्ध है। आधुनिकता की चकाचौंध और परिवर्तित परिवेश में हम लोक से दूर होते जा रहे हैं। कहते हैं कि हमें जब यह अहसास हो कि हम जड़ों से दूर होते जा रहे हैं, उसी क्षण हमें अपनी जड़ों को सींचना प्रारंभ कर देना चाहिए, ताकि सूखने से बच सकें। लोक साहित्य पर केंद्रित यह दो दिवसीय संगोष्ठी भी इसी चिंतन-प्रक्रिया के लिये है।

लोक संस्कृति मनुष्य के सहज जीवन का प्रतिबिंब है। लोक साहित्य हो, कला हो, संगीत हो सभी हमारे आदिम चेतना के निकट होते हैं। एक तरह से यह आधुनिक जटिल जीवन से परे सरल, सहज और सामूहिक चेतना से युक्त होती है। आज जब हम वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के दौर में मानव की सहजता, संवेदना को अति स्वार्थ और आत्म केंद्रित मानसिकता से ग्रस्त देखते हैं, तब लोक की स्वाभाविक, सहज और निष्कपट चेतना में हमें आशा का दीप जलते दिखाई देता है। प्रकृति के बीच उन्मुक्त भाव से हिलोरे लेता मनुष्य, सारी संकुचितताओं से परे जीवन मात्र में विश्वास करता दिखाई देता है।

प्रस्तावित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी **'लोक साहित्य एवं संस्कृति : चिंतन और चुनौतियाँ'** में हमारे समृद्ध लोक साहित्य के विविध पक्षों पर चिंतन, विचार-विमर्श किया जाएगा। वर्तमान परिदृश्य में लोक साहित्य के समक्ष जो चुनौतियाँ एवं समस्याएँ हैं उन पर लोक साहित्य मर्मज्ञों, शोधार्थियों आदि द्वारा गहन चिंतन कर भविष्य की संभावनाओं एवं दिशा पर चर्चा की जाएगी। इन सभी विमर्शों एवं सुझावों को संगोष्ठी के उपरांत पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाएगा। विविध क्षेत्रों से आए विभिन्न लोक साहित्यकारों, विद्वानों द्वारा लोक साहित्य की दशा और दिशा पर व्यक्त विचार, सुझाव स्वतः इस संगोष्ठी का महत्त्व प्रतिपादित करते हैं।

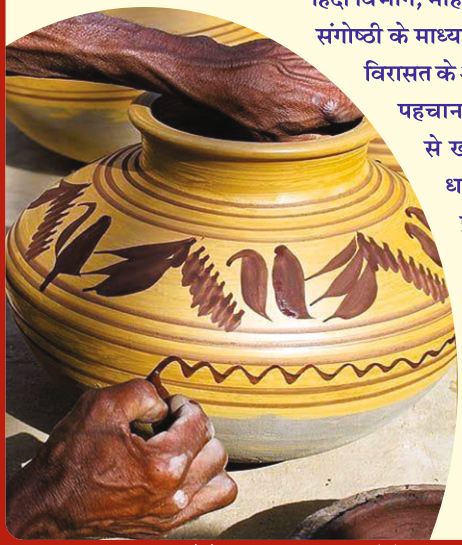

हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर इस द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से हमारे समृद्ध लोक की महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विरासत के अवदान को रेखांकित करेगा। हम सोशल मीडिया के दौर में अपनी पहचान, अपनी संस्कृति, अपनी जड़ों को भूल बैठे हैं और यह हमें भीतर से खोखला कर रहा है। अतः हमारी युवा पीढ़ी हमारी इस बहुमूल्य धरोहर, हमारे लोक साहित्य को सहेजें, संरक्षण करें, उन्हें इस हेतु प्रोत्साहित करना भी संगोष्ठी का उद्देश्य है।

साथ ही इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में एक लोक संस्कृति पर केंद्रित **सांस्कृतिक संध्या** का आयोजन भी प्रस्तावित है जिसमें विशेषतः राजस्थान के लोक कलाकारों द्वारा लोक नृत्य, लोक गीत, लोक नाट्य आदि की प्रस्तुति होगी, ताकि लोक की सौंधी महक और उसमें बसी मिठास को विविध क्षेत्रों से आगंतुक प्रतिभागी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी अनुभव करें तथा लोक संस्कृति के संरक्षण हेतु कटिबद्ध हो सकें।

संगोष्ठी के विमर्श-बिंदु

- लोक साहित्य : महत्त्व एवं संभावनाएँ।
- लोक साहित्य : संस्कृति और समाज।
- लोक साहित्य : चिंतन और चुनौतियाँ।
- हिंदी की विभिन्न बोलियों में लोक साहित्य।
- लोक साहित्य संग्रह की कठिनाइयाँ।
- लोक साहित्य और ऋतु संबंधी गीत।
- लोक कथाओं के प्रकार।
- लोक कथाओं की प्राचीन परंपरा।
- लोक कथा : स्वरूप और विशेषताएँ।
- लोक साहित्य में लोक कथाओं का महत्त्व।
- लोक साहित्य और लोकोक्तियाँ।
- लोक साहित्य और मुहावरे।
- लोक साहित्य और पहेलियाँ।
- लोक नाट्य के विविध स्वरुप
- लोक कलाओं का परिदृश्य
- लोक साहित्य और लोरियाँ।
- लोक साहित्य में राष्ट्रीयता।
- भारत में लोक साहित्य विषयक अनुसंधान।
- लोक साहित्य की धार्मिक पृष्ठभूमि।
- लोक साहित्य में लोक संस्कृति का चित्रण।
- लोक साहित्य और लोक गीत।
- लोक साहित्य का भाषा शास्त्र संबंधी महत्त्व।
- लोक साहित्य में सामाजिक जीवन
- लोक साहित्य में समाज का आर्थिक पक्ष।
- लोकगीतों में काव्यत्व
- लोक और लोक देवता
- लोक और लोक की मान्यताएँ
- विलुप्त होती लोक की परंपराएँ
- संगोष्ठी से संबंधित अन्य विषय

पंजीयन

- पंजीयन शुल्क : शिक्षक एवं अन्य रु. 1200/- शोधार्थी रु. 1000/-, विद्यार्थी - 800/-
  पंजीयन शुल्क विभाग में नकद जमा करवाया जा सकता है अथवा
  Head, Department of Hindi, M.L.S. University, Udaipur, Raj. के खाते में सीधे ICICI Bank, Branch & MLS University, Udaipur के खाता संख्या 694201437677, IFSC Code - ICIC0006942, MICR 313229007 में भी जमा कराया जा सकता है।
- सभी प्रतिभागियों को गूगल फॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन पंजीयन करवाना अनिवार्य है। जिसकी लिंक https://forms.gle/GN4SRJJATieUt28K7 है।
- ऑनलाइन पंजीयन के दौरान पंजीयन शुल्क जमा होने का स्क्रीन शॉट/रसीद अपलोड करना अनिवार्य है।
- जो प्रतिभागी अपनी राशि विभाग में नकद जमा करवाएंगे, उन्हें भी ऑनलाइन पंजीयन करवाना होगा और उन्हें अपनी पंजीयन रसीद की प्रति भी अपलोड करनी होगी।

अन्य जानकारियाँ

- पंजीयन एवं शोध पत्र प्रेषण की अंतिम तिथि 20 नवम्बर, 2023 है।
- आलेख कृतिदेव (010) फॉण्ट साइज-14 या मंगल यूनिकोड फॉण्ट साइज-12 में टंकित होने चाहिए एवं शब्द सीमा 2000-2500 होनी चाहिए।
- आलेख Ms Word Document में प्रेषित करें।
- चयनित शोध पत्रों को संपादित ISBN पुस्तक में प्रकाशित किया जाएगा।
- संभागियों को किसी प्रकार का यात्रा भत्ता देय नहीं होगा।
- संयुक्त शोध पत्र होने पर सभी लेखकों को पृथक-पृथक पंजीयन करवाना होगा।
- संगोष्ठी दिवस पर आपके भोजन की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की जाएगी।
- संभागियों को आवास व्यवस्था स्वयं के स्तर पर करनी होगी।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय

उदयपुर में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (तत्कालीन उदयपुर यूनिवर्सिटी) दक्षिणी राजस्थान में उच्च शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने के लिए वर्ष 1962 में एक अधिनियम द्वारा स्थापित एक राज्य पोषित विश्वविद्यालय है। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्री मोहनलाल सुखाड़िया की स्मृति में सन् 1982 में इस विश्वविद्यालय का नामकरण मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय किया गया। यह विश्वविद्यालय बड़े पैमाने पर आदिवासी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाले दक्षिणी राजस्थान में स्थित है। अपनी स्थापना से ही यह विश्वविद्यालय शिक्षण, अनुसंधान और सामुदायिक सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए प्रयासरत है। उच्च नैतिक मूल्यों, वैज्ञानिक सोच पैदा करने और उच्च शिक्षा के उभरते हुए क्षेत्रों के साथ तालमेल रखने की दिशा में भी विश्वविद्यालय संकल्पवान है। यह विश्वविद्यालय सूचना प्रोद्यौगिकी का शिक्षा, शोध एवं प्रशासनिक स्तर पर अधिकतम उपयोग करने में अग्रणी है, साथ ही भौतिक आधारभूत सुविधाओं एवं ई-पुस्तकालयों की दृष्टि से भी समृद्ध है। विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही हिंदी विभाग की स्थापना हुई। हिंदी साहित्य, शोध एवं आलोचना के शीर्ष विद्वानों ने अपनी सेवाएँ इस विभाग में दी हैं।

संरक्षक मंडल

प्रो. सुनीता मिश्रा
माननीय कुलपति
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

प्रो.सी.आर. सुथार
अधिष्ठाता
वि.सा.वि. एवं मा. महाविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

संगोष्ठी संयोजक

डॉ. नीतू परिहार
सह-आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग, मो.सु.वि.वि., उदयपुर (राज.)
मो. : 9413864055

सह संयोजक

डॉ. नवीन नंदवाना
सह-आचार्य
हिंदी विभाग, मो.सु.वि.वि.,
उदयपुर (राज.)
मो. : 9828351618

डॉ. आशीष सिसोदिया
सह-आचार्य
हिंदी विभाग, मो.सु.वि.वि.,
उदयपुर (राज.)
मो. : 9414851055

डॉ. नीता त्रिवेदी
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग, मो.सु.वि.वि.,
उदयपुर (राज.)
मो. : 9950960999